मार्च 2026, मूल्य : 40

पाखी

सृजन की उड़ान

''खेलत फाग सुहाग भरी, अनुरागहि लालन को धरि के।
मारत कुंकुम केसरि के पिचकारिन सो रंग झरि के।''

–सईद इब्राहिम रस खान

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : संदीप राशिनकर, शशिभूषण, मार्टिन जॉन

वर्ष : 18, अंक 6, मार्च, 2026

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।
स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

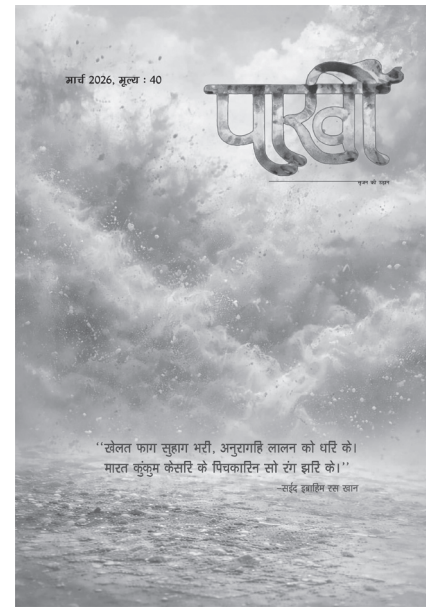

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

डरा हुआ लोकतंत्र 4
चिट्ठी आई है 6

संवाद/व्यक्तित्व संवाद

कहानी को रिपेयर नहीं किया जा सकता : ज्ञान जी संग 'पाखी' संवाद 9
कथाकार के डेड एंड तक पहुंची कहानियां : ज्ञान जी पर राजेंद्र यादव 15

लंबी कहानी/कहानियां

नेशन फर्स्ट : मुकेश कुमार 19
काश! मैं तुम्हारे साथ रहती : अनवर सुहैल 33
पांवों के निशान : रमेश शर्मा 38
दादी की चादर : विनीता शुक्ला 41
वापसी : सुशांत सुप्रिय 44

कविताएं

अमृता पांडे की कविताएं 47
अमिताभ शंकर की कविता 49
मीनाक्षी जोशी की कविताएं 50
महेश कुमार केशरी की कविता 52
आलोक कुमार की कविताएं 53
मधु सिंह की कविताएं 55
विक्रम सिंह की कविताएं 57
ऋचा गौतम की कविताएं 59

मूल्यांकन

समय, सूझ और समझ की कविता : सुनील कुमार 60
'नकारती हूं निर्वासन' अद्भुत काव्य-बोध का संग्रह : विजय कुमार तिवारी 63

संस्मरण

जो मुड़ के देखता हूं : राकेश कुमार सिंह 68

आलेख

स्त्री-मुक्ति की बेचैन गुहारों की कहानियां : प्रज्ञा 71

विवेचना

मोहन राकेश का रचना कर्म : मुहम्मद हारून रशीद खान 82

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

इस बाबर को आप नहीं जानते : कृष्ण कल्पित 90

सत्याग्रह

क्या हम एक नया ईश्वर बना रहे हैं? : प्रियदर्शन 93

प्रति संसार

शुक्ल-ज्ञान जी का स्मरण और 'सम्मुख' का स्वागत : अर्पण कुमार 95

पाखी संवाद–जहां शब्द डरते नहीं / प्रतिक्रियाएं

बंदे में था दम वंदे मातरम् : संपादक 98
हिंदी साहित्य और डर का समय : संपादक 100
आज गोदान लिखा जाता तो होरी कौन होता? : संपादक 107
Big Egos, Small Men/बड़े नाम, छोटे अहं : संपादक 109

डरा हुआ लोकतंत्र

मेरी समझ से लोकतंत्र की सबसे बड़ी पहचान चुनाव नहीं होते, संसद नहीं होती और न ही संविधान की मोटी किताब। लोकतंत्र की असली पहचान है वह कि असहमति को कितना सह पाता है और उससे भी आगे बढ़कर यह कि वह अपने ऊपर उठी हंसी को कितना सह पाता है। व्यंग्य लोकतंत्र का अपमान नहीं होता, वह उसका आईना होता है। जिस समाज में कार्टून से सत्ता असहज हो जाए, जिस व्यवस्था में किताबें संकट बन जाएं और संसदीय बहसें टलने लगें, वहां प्रश्न केवल किसी एक नेता या दल का नहीं रह जाता, बल्कि वहां प्रश्न लोकतांत्रिक आत्मविश्वास का हो जाता है। आज जब बजट सत्र एक पुस्तक पर चर्चा को लेकर राजनीतिक टकराव की भेंट चढ़ जाता है, तब 'डरा हुआ लोकतंत्र' केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि एक गंभीर चेतावनी बन उभरता है।

इन दिनों आजाद मुल्क के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को लगभग हर समस्या का प्रारंभिक कारण बताने का दौर है। चीन नीति, कश्मीर समस्या, समाजवादी ढांचा, संस्थागत संरचना, हर बहस में नेहरू का नाम अनिवार्य रूप से उपस्थित रहता है। आलोचना लोकतंत्र का स्वाभाविक अंग है और नेहरू इससे मुक्त नहीं थे और न ही होने चाहिए। किंतु इतिहास का एक महत्वपूर्ण पक्ष अक्सर विमर्श से गायब रहता है कि नेहरू वह नेता थे जिन्होंने शायद भारतीय इतिहास में सबसे अधिक सार्वजनिक व्यंग्य का सामना किया और उसे लोकतंत्र की सेवा माना। महान कार्टूनिस्ट के. शंकर पिल्लई ने नेहरू पर चार हजार से अधिक कार्टून बनाए। यह संख्या केवल सांख्यिकीय नहीं है, यह उस वातावरण का प्रमाण है जिसमें सत्ता आलोचना से भयभीत नहीं थी।

शंकर के कार्टूनों में नेहरू कभी अंतरराष्ट्रीय मंच पर आदर्शवाद में डूबे हुए दिखते थे, कभी घरेलू नीतियों में उलझे हुए, कभी चीन के प्रति अत्यधिक भरोसा रखने वाले और कभी योजना आयोग की योजनाओं में तल्लीन स्वप्नद्रष्टा। एक प्रसिद्ध कार्टून में नेहरू को प्रतीकात्मक रूप से निर्वस्त्र दिखाया गया, ठीक उसी कथा की तरह जिसमें सम्राट के वस्त्रों का भ्रम टूट जाता है। यह सत्ता की गरिमा का अपमान नहीं था, यह सत्ता के मिथकों को चुनौती देना था। और इस चुनौती पर नेहरू की प्रतिक्रिया ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा था 'शंकर डोंट स्पेयर मी आइदर' 'शंकर मुझे भी मत बख्शना।' उन्होंने यह भी लिखा कि सार्वजनिक जीवन में खड़े लोगों की कमजोरियों को बिना दुर्भावना उजागर करना लोकतंत्र की सेवा है, क्योंकि हम अक्सर आत्ममुग्ध हो जाते हैं और हमारे अहंकार का पर्दा हटना आवश्यक है। यह केवल व्यक्तिगत सहिष्णुता नहीं थी, यह लोकतांत्रिक दर्शन था।

नेहरू ने व्यंग्य को न केवल सहा, बल्कि उसे संरक्षण दिया। शंकर 'दी वीकली' पत्रिका का उद्घाटन उन्होंने स्वयं किया। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट जैसी पहलों को समर्थन मिला। जिससे ताजा-ताजा आजाद हुए देश में सांस्कृतिक और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिला। इसी वातावरण में आगे चलकर आर.के. लक्ष्मण का 'कॉमन मैन' जन्म ले सका। लक्ष्मण का कॉमन मैन हर सरकार के सामने खड़ा रहता था, मौन, किंतु तीखा। वह भ्रष्टाचार पर हंसता था, नीतियों पर प्रश्न उठाता था और सत्ताधारियों की गंभीरता को हल्की मुस्कान से भेद देता था। लोकतंत्र जीवित रहा क्योंकि उसे हंसी से डर नहीं था।

लेकिन इसी नेहरू की बेटी के शासनकाल में भारतीय लोकतंत्र ने वह काल भी देखा जब शब्दों पर पहरा बैठा। 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा घोषित आपातकाल ने यह स्पष्ट कर दिया कि लोकतंत्र का ताना-बाना कितना नाजुक हो सकता है। प्रेस पर पूर्व-सेंसरशिप लागू हुई। अखबारों को छपने से पहले सरकारी अनुमति लेनी पड़ी। कई संपादकीय समाचारपत्रों में स्थान खाली छोड़ दिए गए ताकि पाठक समझ सकें कि वहां कुछ था जिसे प्रकाशित होने से रोक दिया गया। पत्रकारों को गिरफ्तार किया गया। व्यंग्य और आलोचना को सीमित कर दिया गया। यह केवल राजनीतिक संकट नहीं था, यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संकट था। आपातकाल ने दिखाया कि जब सत्ता असुरक्षित महसूस करती है तो वह शब्दों को नियंत्रित करने लगती है।

आज औपचारिक आपातकाल नहीं है। संविधान सक्रिय है, न्यायपालिका मौजूद है, चुनाव नियमित होते हैं। फिर भी बहस से बचने की प्रवृत्ति दिखती है। हाल का बजट सत्र पूर्व सेना प्रमुख मनोज नरवाने की पुस्तक 'फोर स्टार्स ऑफ डेस्टिनी' पर चर्चा को लेकर विवादों की भेंट चढ़ गया। यह पुस्तक एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी का संस्मरण है—नीतिगत